

पल्लव

वर्ष : २

अंक : ६

पूर्णाङ्क : १५

२०५१ चैत

सम्पादक तथा प्रकाशक : धीरेन्द्र प्रेमर्षि, सहयोगी : नीरज कर्ण, रूपा धीरू आ सुनील पुरी

प्रतिनिधि : उमेश भगत (विराटनगर), श्यामसुन्दर कापड़ि 'शशि' (जनकपुरधाम)

कम्प्यूटर सेटिङ्ग : भ्याली कम्प्यूटर सर्भिस, पुतलीसङ्क चौक, बागबजार, काठमाण्डू

अइ अंकक आर्थिक सहयोगी : डा. मणिकान्त ठाकुर, फुलेर्टन, कैलिफोर्निया, अमेरिका

गजल अंक

पल्लव-ध्वनि

प्रस्तुत अछि- पल्लवक चीरप्रतीक्षित गजल अंक । मूलतः उर्दू-फारसीक रचनात्मक विद्या मानल जाइत गजल वर्तमानधरि अबैत-अबैत दक्षिण एशियाइ प्रायः सम्पूर्ण भाषामे एतेक नै रचि-बसि गेल अछि जे प्रत्येक भाषाक साहित्यमे ई अपन महत्वपूर्ण स्थान बना लेलक अछि । गजलक अइ विस्तृत यात्रामे एतबे आधारभूत परिवर्तन भेलैक जे सुरा-सुन्दरीक वर्णनक संकुचित घेरासँ बाहर भ जिनगीक विविध पक्षक चित्र प्रस्तुत करबाक प्रयत्न करैत अइमे सफलता पाब' लागल गजल ।

शास्त्रीयताक जंजीरसँ जकड़ाएल मानसिकताक कारणेँ एक शताब्दीपूर्व पं. जीवन भादुरा मैथिलीमे शुरू कएल गेल गजल-यात्राके मैथिली साहित्य आइसँ एक दशक पूर्वधरि सेहो नीक जकाँ नै स्वीकारने छल । मुदा एकरा गजलकारसभक दृढ आत्मबलेक प्रभाव कहल जाए जे मैथिली गजलक गाछ भरपूर मात्रामे चतरि गेल । डा. तारानन्द वियोगी वर्ष १९८१ के अइ लेल गजल वर्ष कहने छथि जे ओइ वर्ष विभिन्न पत्रपत्रिकामे ३८ टा गजल छपल । मुदा पल्लवक अही अंकमेटा लगभग ओतबे गजलकारके समाविष्ट करबाक सुयोग भेटल अछि, जे गजलक सुदृढ स्थितिक प्रमाण बनि उपस्थित अछि ।

मैथिली गजलके समृद्ध बनेबामे जिनकासभक महत्वपूर्ण स्थान छनि, प्रायः हुनका सबक्योलग पल्लव नियमित रूपमे गेल करैत अछि । हुनकासभक सहभागिता अइ गजल अंकमे पाबि गौरवान्वित हेबाक अपेक्षा छल । अही अपेक्षा किंवा मोहसँ गजल अंक प्रकाशनमे विशेष विलम्ब भ गेल । तैयो अपेक्षित सम्पूर्ण गजलकारक गजल प्राप्त नै भ सकल । गर्वक बात यह जे गजलके अइ उँचाइपर पहुँचेबामे पर्याप्त योगदान देनिहार स्व. कलानन्द भट्टक गजल छापबाक सौभाग्य भेटल अछि जे स्व. भट्ट मृत्युसँ दशे दिन पूर्व पठौने छलाह ।

समग्रमे गजल अंक अपेक्षित स्तरीय नै भ पेबाक बातके स्वीकारैत हुनकासभसँ क्षमा याचना करैत छी, जे गजल त पठौलनि मुदा छापल नै जा सकल ।

स्व. कलानन्द भट्ट

मिजाज बीसवी सदीक बहुत गर्म भेल छै
कूर, हिंसक, छली ओ आदमखोर भेल छै

पीने दारू बताह, लोक-लाजक ने पाह
देह भभकैत घवाह, खूने-खून भेल छै

शील भंग, हत्या करबैछ कतौ आत्मदाह
कतौ वर्वर उन्माद जातिक विस्फोट भेल छै

मइरारहल राति-दिन युद्धकेर विभीषिका
फेरो धारपर कृपाणकेर शान भेल छै

शंकामे विध्वंसक आइ जीबिरहल लोक
अविवेकी अधिकारमे अणुबम भेल छै

श्री राज

भमरा बन्हा ने जाए से, फूलक दुलारमे
जोगिन नजरिके टोना, लागए कटार ने

नभसँ नजरि बचाक' चन्ना निहुरि तकैए
पूनीक राति चकमक, बीतए अन्हार ने

सामर सिनेही बदरा, नदियोक ही जुरबै
नै मेटए उताप मनके, साओनक फुहारमे

सुरूजक पुरूब आ पश्चिम दिनमे गगन निहारी
भय हियमे समाए रातुक लागए पहाड़ ने

कतबो मनाबी मनके, शंका बनल रहैए
मीभए ने आश दियना, नोरक टधारमे

स्व. भट्टक स्मृतिमे

फूलचन्द्र भा 'प्रवीण'

भोरे-भोरे की ई सजा देलकै
रातिकेर चानके नुका लेलकै

टुकटुक ताकिएरहल सबकियो
क्षणभरिमे कत' डुबा देलकै

भरिनयनो ने रूप देखि सकल
वालारूण त फिलमिला देलकै

शिशिरक चाँदनी केहन शीतल
गंध रग-रगमे समा देलकै

हएत संध्या कखन उगत चन्ना
'प्रवीण'क प्राणके हरा देलकै

रमानन्द रेणु

आजुक जीत ने जीत हारि आधार बनल अछि
आजक रीति कुरीति नीति आचार बनल अछि

सम्बन्धक सन्यास अपरिचित परिचित अछि
बंधन मुक्तिक गीत आइ साकार बनल अछि

पोसल स्वप्नक तार टूटि छिड़िआएल सगरो
आइ प्रीति दुर्नीति नियम निस्तार बनल अछि

कांचन-प्रति आकृष्ट कर्म बाधित नेतृत्वक
जन-सहयोग निरंतर टूटल तार बनल अछि

प्रतिस्पर्धा अछि अर्थ-संकलन साँपक चकरी
लोक मनोरथ फोंक आइ अधिकार बनल अछि

सीफल सब संयोग भोग सब रोगक लक्षण
दिशाहीन जनु-सागर उमड़ल ज्वार बनल अछि

कीर्तनमे भ व्यस्त अपन सब व्योत बिसरलौ
देश बिकाएल, सेवा आइ सुतार बनल अछि

अपनेमे हम लड़ी-मरी अनका लेखे की
मुखियाके मुह चाउर, यह व्यापार बनल अछि

सियाराम भा 'सरस'

फिलमिलीके उठा त दिय
चान्दनी जगमगा त दिय

भाव लप्प द पकड़ि लेब हम
अहाँ ठोरे हिला त दिय

चान शरदक चमकतै कोना
मेघ केशक हटा त दिय

प्रेम मन्दिरमे पूजा छियै
फूल मुस्की खसा त दिय

हमर तनमन सुचालक अखन
बिजलिये भनभना त दिय

तेज नयनक 'सरस' घोटसँ
सेजके जगमगा त दिय

डा. राजेन्द्र विमल
हो महल बा मढ़ैया, रमसान-सन जरूरी छै
जीबाक हेतु भ्रम किछु, भगवान-सन जरूरी छै

गढ़ि-गढ़िक' अन्धकार, जोहिरहल छी प्रकाश
विधिकेर अभिशाप ई, बरदान-सन जरूरी छै

छेनी अहाँ छीनि लेलौ, नहसँ हम गढ़ब चान
अहाँक धर्म अमा, हमर चान-सन जरूरी छै

पाप जँ थिक प्यार त, पापी रह' दिय
बंधनक अनुभूति, मोक्ष-ज्ञान-सन जरूरी छै

नोरमे फुलाएल गजल-कमल हमर नै छीन
हारल 'विमल' सिकन्दर महान-सन जरूरी छै

अहाँक अश्वपर लागल रक्त आइ पूछिरहल
इन्सानकेर लहास की इन्सान-सन जरूरी छै ?

डा. रामदेव भा
गमे-गमे गाम हमर शहर बनल जाइए
आब मान्य नितदिन अकरहर बनल जाइए

गढ़ल-मढ़ल नेह-गेह भरि-भरि खँघरिरहल
गामक अपराहु आब महर बनल जाइए

टोल-टोल गच्छ-गोल हीत-मीत तोड़ि-छोड़ि
नीर-क्षीर फरक होइत जहर बनल जाइए

हेम-छेम प्रीति-रीति भरल सरस धार प्रकृत
रोकि-छेकि उच्च-बुच्च छहर बनल जाइए

घोर तमस-बढ़ विवस मुक्ति-किरण-रेखालए
आस-बाट तकैत पल पहर बनल जाइए

बैकुण्ठ विदेह

जगतक सब व्यापार चलैए चक्कूसँ
प्रजातंत्र सरकार चलैए चक्कूसँ

ब्रह्मपुत्र आ व्यास लाल छल पहिनहिसँ
गंगोमे पतवार चलैए चक्कूसँ

कहुना कटलै राति मुदा की आब हेतै
दिनुको पहर अन्हार रहैए चक्कूसँ

बापक माथ घसल छै ठेहुनसँ निच्चा
आब पुत्र अधिकार मंगैए चक्कूसँ

एकलव्यक चिन्ता ककरा छैक एत'
सब अप्पन संसार रचैए चक्कूसँ

न्याय, संविधानक सब गप्प अनर्गल थिक
सब 'धारा'मे धार पड़ैए चक्कूसँ

ई महफाक नियति की छै से के जानए
कपैत जकर कहार चलैए चक्कूसँ

सत्य कहाँसँ भेटत पढ़बा-सुनबालए
सब आखर-अखवार छपैए चक्कूसँ

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'
अहाँ बातक बेअर्थ लगा मुह फुला बैसै छी
आनोक भाव अपने बूझि मुह फुला बैसै छी

जकर तहघरि पहुँचब अछि दुरूह अहाँक लेल
तैयो बलधिगरोपर उतरि मुह फुला बैसै छी

चालनिकेर छेद गनल भलै ने अपने कहियो
सूपक छिद्र ताकि-ताकि मुह फुला बैसै छी

कर्तव्यक चट्टान ओइपार वासन्ती बहार सजल
अनुरागक 'अ' विनु पढ़ने मुह फुला बैसै छी

दम्भ हएत, स्नेह-श्रोत अहीसँ बहराइछ अरे
बिक्रीहीन सौदा की ? मुह फुला बैसै छी

रमेश
हम जखन-जखन अस्तित्व अहाँपर ओड़ि देलौ
अहाँ तखन-तखन सतरंगी सपना तोड़ि देलौ

हम सोचलौ प्रेमक दीप जराएब जीवनभरि
अहाँ कोबरेमे अहिबातक पातिल फोड़ि देलौ

हम डोपटासँ आँचरके कसिक' बान्ही, पर
अहाँ महुअक घरसँ पहिनहि आंगुर छोड़ि देलौ

हम स्वर्णिम-स्वर्णिम कामनाक नित सेज सजी
अहाँ कारी-कारी मोसि ताइपर बोरि देलौ

हम हाथ पकड़लौ अहाँक, वसन्ती जिनगीलए
अहाँ छुड़ भेल पतझड़सँ नाता जोड़ि देलौ

हम पुष्प-वाण संधानल सृष्टिक रचनालए
अहाँ पञ्चम-स्वरसँ पहिने वीणा फोड़ि देलौ

डा. शोफालिका वर्मा
सागरमे आगि बिजली आसमानमे
बेचैनी कत' ओ जे अछि हमर प्राणमे

दिन एहनो आएल हमर जिनगीमे
बुझलौ जे अपन मिलल छल आनमे

जिनगीक रंग-ढंग की देखी हुनकर
छनि रूप बदलैत छन-छन आसमानमे

नीव पड़ल नोरक धारपर जकर
ढहैतरहल हरदम ओ महलक शानमे

के जाए उपरवलासँ ई पूछि आओत
बना' मिटेनाइ अछि कोन विधानमे

ओ संग-संग हमर चलि त रहल छथि
मोन भटकल छैक हुनक कोनो ध्यानमे

गीत 'शोफाली' दिलक ई आगि थिक
बूझि नै ओ पबैत छथि नशाक तानमे

शीतल भा
प्रदूषित पानि छै मुदा फरनाक मधुर गान छै
छोटछिन ई देश मुदा देश त महान छै

शाहदेवक महादेवक पूजाक भूमि अइ देशमे
पुरहितक सरकार जहन बाँकी जन जजमान छै

जुत' पहिने बीस वर्षक बूढ़सब ओछाइत छल
तत' मस्त नाचिरहल साठि वर्षक जवान छै

पग-पगपर देव, प्रहरी, रक्षक जत' छइ छथि
तँ त बालिकाक लेल भोजनालय स्मशान छै

दरिद्रता अछि भागिरहल ऋण आ आभारसँ
प्रजातन्त्र आएल तँ त हिन्दुओके रमजान छै

गोपालजी भा 'गोपेश'
छी सत्ताक गलियारीमे त बोटारक किए डर
उक्खड़िमे जखन मुह देल, समाठक किए डर

नै बनबालए 'हरिश्चन्द्र' खेने छी सप्पत
तँ देबामे जनताके आशवासन कोन डर

करू भाषणक प्रेकिटस-जुनि व्याकरणक तारतम्य
कसने रहू लगामटा, नै दल-बदलकेर डर

अछि बनल जँ राजनीति अन्तहीन प्रक्रिया
उष्ठा-पटक निरन्तर, केओ उप्पर-केओ तर

'गोपेश' होउ सचेत, अछि ऊठल विश्वास
बैसबैछ तँ निर्धोख सब अपन-अपन गर

प्रेमचन्द्र पंकज
एहने छै दुनिया एहने समाज छै
परबाक खोता हड़पि लैत बाज छै

नमरी-चपसटकहीक नोर के पोछतै ?
सगरो बजारमे महगीएक राज छै

यदि लाभ अहाँसँ, मतलब अहीसँ तखन
बेमतलब अहाँसँ ककरा की काज छै ?

अफिसमे काज चलत उपहारक नामपर
नाम छैक नव, मुदा पुरने रेवाज छै

पं. नित्यानन्द मिश्र
घोन्हि फटिते गगन आर अन्हरा गेलै
लाल उगिते सुरूज मेघ कचरा गेलै

मोन पसरल मनोरथ पथारे छलै
रौद मकड़ा गेलै आस भकरा गेलै

मोन छल घर बनेबै त नीके जकाँ
न्योसँ पहिने मुदा बाँट-बखड़ा भेलै

खोल हाँसक पहिरि-ओढ़ि बगुला एलै
लोल चरिते मुदा आइ पकड़ा गेलै

मुह फूजल कोना चुप्प रहतै हमर
आब देखिते-देखैत आँखि पथरा गेलै

शारदानन्द दास 'परिमल'

अखि दर्द सभक सौंसमे समटल अपन-अपन जानए ने केयो सिरजि गेल के, कत, कखन

जाइ बागमे खोता लगा जमि गेल ई मुनियो रखबारीके ने अखि पता केहन अमूल्य धन

अदभुत स्वरूप धारि ई प्रगटैत अखि तेना कखनो करील बनि चुभे कखनो मृदुल सुमन

वंशीक ध्वनिसँ कान्हक राधाक सुधि जँक विचरैत दिग-दिगंत अखि क सीमो अतिक्रमण

लिखबालए लेख रजनीगंधाक लिपिमे चलैछ त पएर मारने तामसांधमे गहन

पछलेछ आर्द मन जखन करूणाक कोरसँ बुनो सगैछ सहजहि उमड़ल समुद्रसन

सिकता-कणक चमक तेना पसरैछ चित्तमे पड़ि जाए छोट तखने अटावेशलए गगन

परतर करब योगेशसँ, संभव ने अखि मुदा बहुधा जीबैछ आदमी लघु-नीलकंठसन

एकरे सुसौम्य गहि विभा सिरजैछ तूलिका छवि अप्रतिम अथाह मुक्त कल्पना प्रवण

सिंहकैत ई गजलमे हो कि पुलकैत गीतमे व्यक्तित्व मजा जाए एकर पाबिक' तपन

रमाकान्त राय 'रमा'

जीबालए जिनगी अखि, कहुनाक' जीबै छी गुदरी भेल चेघरीके गुमसुम हम सीबै छी

पौरुष पुरखाक छल, पुरुष हमहूँ कहाबी पुरुषार्थक छूति कत' छूटल से हीबै छी

आसक तरेगनसंग, निरसल हम चान नभक रातुक अन्हरियाके आँजुर भरि पीबै छी

काँट-फूल, माटि-पानि, आगि-छाउर एक्के, त अवसर-लग ओरि पीठ पेटक भर लीबै छी

कहियोक' भांग जकाँ, कहियोकाल माहुरसन धीपल जे चाह जकाँ फूकि-फूकि पीबै छी

महेन्द्रकुमार मिश्र

हम देखिक' अहाँके, सबकिछु भुला चुकल छी जीयब हम कोनाक', सबकिछु हेरा चुकल छी

हमर जिन्दगी अहाँ छी, हमरासँ मुह ने मोड़ निष्ठुर अहाँ केहन छी, बाती मिभा चुकल छी

हमर चांदनी अहाँ छी, अहाँ जिन्दगीक मालिक पीड़ा कते सहब हम, सबकिछु लुटा चुकल छी

हम प्रेमकेर भिखारी, पाथर अहाँ बनल छी शराब की पीयब हम, जते नोर पी चुकल छी

अहाँ प्रेम खेल समझी, हमर जिन्दगी नरक भेल आब शेष रहल जीवन, सबकिछु जरा चुकल छी

धीरेन्द्र प्रेमर्षि

अस्तित्वक ज्ञानसँ आवाद भेल चेचिन्या चतरल गुमानसँ बरवाद भेल चेचिन्या

अपन खेत-खरिहानक आरि-धूर अपने लागल जे बनब' विवाद भेल चेचिन्या

गोलीसँ छलनी भ बदैतरहल आस्थासब करैत रक्त-तर्पण उन्माद भेल चेचिन्या

चीत्कारक गीत लोक सुनलक त कान पाथि जागल बिहाड़ि शंखनाद भेल चेचिन्या

मत्स्य-न्याय हर्षित छल आर एक आहारसँ उठि गेल उजाहि आ विषाद भेल चेचिन्या

हमरो परिचयक घेंट छपटिरहल अखि राति बारि दिय दीप आब सम्वाद भेल चेचिन्या

चन्द्रेश

रग-रग फनकिरहल लिधुरक उवालपर जी चटपटारहल जातिक सवालपर

घाओ जत'-तत' दाओ भितरघात राजनीतिक उठल संकुल बवालपर

रंजिते इतिहास रंजित पात - पात टुभकै अखि जीवन भोजक गदालपर

गीत बनैछ दर्द दहशतिक आँखिमे चान बुनए सपना सुरूजक मशालपर

मनुक्खे लिधुराए गीध बनल मनुक्ख प्रश्ने अनगिनल देशक कपालपर

विनोदानन्द

हम एक-एक पल जिनगीसँ लड़िरहल छी हम एक-एक कण चिनगीसँ जरिरहल छी

काँट-कुशकेर बाटपर खाली पग चलि' हम एक-एक क्षण कनगीपर भरिरहल छी

सुनगिरहल पजरिरहल छी दावानल जकाँ व्यवधानक सिक्कडिसँ जकड़िरहल छी

राति हो वा दिनो, सतत कर्मकेर कोरामे हम प्रकृतिके सनकीसँ हकरिरहल छी

हारल, हारब मुदा संघर्षक आगि पजारब दृढ संकल्पित सत्यज्योति बनि बरिरहल छी

दिलिपकुमार भा 'दीवाना'

क्रन्दन-हाहाकार भेटल भोरे-भोर शिशुक चीत्कार भेटल भोरे-भोर

हम त चाहल हँसीक फूल खिलए मुदा दर्द उधार भेटल भोरे-भोर

संवेदना ल जहिना विदा भेलौ हम पूरा खूजल बजार भेटल भोरे-भोर

कविता कहुना लिखी कालक नाम बस एतबे अधिकार भेटल भोरे-भोर

वैद्यनाथ मिश्र 'बैजू'

हे भाइ अहाँसँ बात एक पूछी हम बान्हल घरके एना किए उजारै छी ?

धूर जे मिभा गेल ओकरा मिभाए दियो ओहिमे निब्रहेस द फेर किए पजारै छी ?

एतेक अहाँ खेलौ तैयो ने भरल पेट खापड़िमे घान द फेर किए लाइ छी ?

जे अखि बलगर तकलालग डर होइए हमरालग बेर-बेर गट्टा किए फारै छी ?

उल्टे जमाना अखि अहाँके की दोष दी ? हमरे चोराक' पुनि हमरे दवारै छी ।

रोशन जनकपुरी

मुर्दाक शहरमे भोर नै होइत अखि पाथरक आँखिमे नोर नै होइत अखि

जानि नै कहियाधरि बूझत ई लोक, जे बघशालामे आत्माक जोर नै होइत अखि

आदमीक रक्त बहैछ गीता-कुरान हेतु पसेनाक डकैतीमे शोर नै होइत अखि

रोटी चोरा-चोरा सोनक चमचा बनए केओ मुदा अइ खेलमे चोर नै होइत अखि

उदारवादी सेठजी बन्हकी नेने छथि 'ज्वार'के तँ आतंकक समुद्रमे हिलकोर नै होइत अखि

पैलीमे घुसियारहल राजनीति जत' 'जनकपुरी' आम आदमीक ओइ निजाममे ठौर नै होइत अखि

सारस्वत

नोचि लेबौ गाल तोहर, नोचि लेबौ दाढ़ी रौ जातिकेर मनसा तू, तोड़ि देबौ गाड़ी रौ

कोरनामे दूध नै, कोहामे मूस रौ घेने छै रूप तैयो, जोति लेबौ बाड़ी रौ

गोबरमे गाछ भेल, गाछपर चिड़ै रौ के करीम, के रहीम, के किसुन-मुरारी रौ

पोथी उधार लेब, कनियाँ उधार लेब लेबालए धर्म कोन, चलतै पैकारी रौ

दूभिपर ओस देत प्रेमकेर परिभाषा तखने समाजकेर खुजतै बखाड़ी रौ

कर्ण संजय

नेहोरा करै छी कने मुस्किया दियो बेजाए नै लागए त कने कनखिया दियो

तरबा तपैए बालुपर चलैमे छाहरि भ जेतै कने लट लहरिया दियो

डर बड़ होइए, लौका लौकै छै प्रिये चलबे करब कने फूही फुहिया दियो

चान चमकैए, हृदयक आकाशमे आबि जाएत कोरमे कने आँचर छिरिया दियो

चहयोंग राशि : दू टका

पल्लव, जि. प्र. का., ल. पु., द. नं. - ११४/०५०/५१

म. क्षे. ह. नि., द. नं. - २१/०५१/५१

सम्पर्क पता : पो. ब. नं. - २७१५, काठमाण्डू, नेपाल

अथवा पुरना पता

फोन नं. ५२११५१

श्यामसुन्दर 'शशि'

अपना अपनीक होइमे काटल-कटलसन लोक
संगोर करबाक दोइमे फाटल-फटलसन लोक

पी रक्त दलितक छुटतन्त्र उड़ीस जकाँ बघारहल
कुसुता पलटबाक बेरमे जाँतल-जाँतलसन लोक

सूर शासक, मूढ सेवक, भ्रष्ट नेताक कथे कोन
विषदन्त तोड़बाक मोरमे मातल-मतलसन लोक

बन्धकी पड़ल निमी-भूमि सिसकिरहल जनकसुता
मुक्त करबाक बेरमे बाँटल-बटलसन लोक

जाति-वर्णक नामपर गुमसिरहल एकवालक कलाम
तिलका देखेबाक तोड़मे पाटल-पाटलसन लोक

कलुषित हृदयसँ दानकेर घट द्वारे-द्वारे पुगत की
अखि याचनाकेर लोभमे साटल-सटलसन लोक

अजितकुमार आजाद

हम सपना देखैत छी, सुरूज-चानकेर
अइ धरतीपर अगबे, गहूम-धानकेर

मीठ मुसकी रहए, सबहक ठोरपर
बान्ह टूटए नै कहियो, कमला-बलानकेर

गरजए नै बन्दूक, फूटए नै बम
गनती नै होबए आब, कहियो जानकेर

कहियो नै टूटए आब, स्नेहकेर सूत्र
सुनी संदेश हमसब, आरती-अजानकेर

जीउ जिनगीके सब, हँसि-हँसिक' भाइ
नीक सोची सदति हम, दुनिया-जहानकेर

ललन दास

बात कहियौ ई ककरा बेकार जिनगी
होएत नाकट हमर आ देखार जिनगी

दुनियाके चुभैत छै काँटे केवल
फूल हमरा चुभैए बेकार जिनगी

सुन्दर नै शीतल नै छै ई इजोरिया
चान लागैए चिनगी बेकार जिनगी

जकरे हम साथी-सहारा बूझल
भेल बैरी से बड़का बेकार जिनगी

मुरझाएल, सुखाएल ई निरस कथा
धक भरले जुआनी बेकार जिनगी

धर्मेन्द्र विह्वल

अपनाके बेचि जिनगी तोरे नाम क देलियौ
मुर्दा बनि जीबाक तोरा इन्तजाम क देलियौ

सीसो आ आम छल सब पहिने बिका गेल
बाँकी घड़ारियो तोरा जीवन-दान द देलियौ

रक्तक सम्बन्ध त छल सब पहिने टूटि गेल
कफनोक जोगाड़ क कष्ट निदान क देलियौ

राति-रातिभरि जागिक' छलियौ तोरा सेबने
सब राति आइ तोरा हम इनाम द देलियौ

तोरा जँ जूड़ौ त साड़ालए कने ठाँ द दिहें
आइ तोरा सबटा तिलतिल दान द देलियौ

सुरेन्द्र प्रभात

वसन्तक आगमनसंग मन टनमना उठल
महलक दिवारोसंग छत गमगमा उठल
बगुला समान ध्यान प्रियतमपर टांगल
फगुआक सिंगारोसँ मन कनकना उठल

पतिआक पाँति पढ़ि आश छल ओ औता
चटिआक मास्टर प्रीति-पद्य ओ पढ़ौता
कल्पनाक सागरमे विचरैत साँझ-भोर
प्रीतक सवारोसंग चूर खनखना उठल

अहाँक उपस्थिति विन दिन छल अन्हारसन
भण्डारक सोन मन, तन छल कंगालसन
शीतलताक संगी शशिकेर ज्योतिसम
दुःखक पथारोमे गीत गनगना उठल

पिआक मिलनसंग फूल भेलै चम-चम
स्वर आ संगीतसम पायलकेर छम-छम
जानि नै किए हमर मन भेलै बताहिसन
घाखक केवार बन्न मन सनसना उठल

अतुलकुमार मिश्र

देखिते देखैत राति बितौलौ देखिते भ जाए भोर
कपारमे लिखलाहापर, नै चलै मनुष्यक जोर

कोरामे बच्चा देखल त नगरमे भ गेल शोर
सापँक विषक एक्केटा बस सापँके विष तोड़

सगरो पसरल चोर-चोर, हृदयोमे एक चोर
मस्तिष्क चोरा नैछ, आँचरक दूध आ आँखिक कोर

हमसब बाकल ककर नै हाँकल, अखि साटल होइ
सोचक खोंचसँ घाओ नै होइ, फाटल मस्तिष्कक जोड़

रमेश रंजन

गुम्सैत खढ़के जीतल हमर चेहरा
खड़ेबाक मोहमे तीतल हमर चेहरा

जेना हो पफाएल घूर तहिना लागए सुरूज
सुनगिक' पजरबालए शीतल हमर चेहरा

जोहै छी बाट गुमसुम खढ़क खड़ेबाके
सोना पघलि बनल पीतल हमर चेहरा

हिम्मत कनैए आइ किस्तकेर चालिसँ
युग बादशाहक आब बीतल हमर चेहरा

मिटेबापर लागल अखि अपने लोक अपनाके
देख-देख तमाशा ई रीतल हमर चेहरा

कन्हैयालाल मिश्र

अहाँक यादके हरेक दिन छुपेलौ हम
अपने नोरके अपन मीत बनेलौ हम

अहाँ विना कोनो खुशी, मनके छूलक नै
बड़ा मुश्किलसँ अपन, जखम दबेलौ हम

सबकेओ अहाँसन नै, सब बेवफा निकलल
चाँदनी रातिके 'उफ' कतेक बजेलौ हम

डर लगैत अखि कोनो दोसरसँ प्रीत करैत
अहाँक प्यारसन कोनो प्यार नै पेलौ हम

अहाँ चलि आउ छुबिक' मरि जाएब हम
अहाँ नै त किछु नै, संसारसँ पढ़ेलौ हम

गोविन्द दहाल

जीवनसँ डेराक' भागब कोनाक'
अर्द्धमूर्च्छित परिधिमे जागब कोनाक'

बेपरवाह रहब कहैत छी विश्वसँ कतौ दूर
सीमा कर्तव्यक हम नाँघब कोनाक'

रिक्त भेल जीवन-घट लुटाएल, सब सठि गेल
भीख श्वास-प्रश्वासकेर माँगब कोनाक'

सूपमहक भाटासन गुड़कैत रहलौ सदा
लक्ष्य विना बाट कोनो लागब कोनाक'

एक-एकक' जिनगीकेर खूजल अर्थसब
चौबटियापर स्वाभिमानके टाँगब कोनाक'